







# संपादकीय

# के जरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ रैली निकली

विपक्षी दलों का गठबंधन 'इंडिया' देश के हितों और लोकतंत्र की रक्षा के लिए 31 मार्च को दिल्ली के रामलीला मैदान में महारैली करेगा प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने आवकारी नीति से जुड़े धनरोधन के मामले के संबंध में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को बृहस्पतिवार 21 मार्च को गिरफ्तार कर लिया था, जिसके बाद आप की दिल्ली इकाई के संयोजक गोपाल राय और कांग्रेस पार्टी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में महारैली घोषणा की है। आप 'इंडिया'-इंडियन नेशनल ड्वलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस-का घटक दल हैं। महारैली में 'इंडिया' गठबंधन का शीर्ष नेतृत्व शिरकत करेगा। प्रेस कॉन्फ्रेंस में मौजूद दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली ने आरोप लगाया कि विपक्षी दलों को समान अवसर नहीं दिए जा रहे हैं। लवली ने केजरीवाल की गिरफ्तारी पर रोष जताते हुए अपनी पार्टी के खातों को 'फीज' (लेन देन पर रोक) का भी जिक्र किया। कहा कि महारैली न सिर्फ राजनीतिक रैली होगी, बल्कि देश में लोकतंत्र को बचाने और भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के खिलाफ साझा आवाज उठाने का भी आह्वान करेगी। बहरहाल, केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ विपक्षी गठबंधन की ऐसी तैयारियों से लगता है कि वह अपने प्रति आम जन के मन में सहानुभूति पैदा करना चाहता है। दरअसल, आप और 'इंडिया' गठबंधन को लगता है कि अन्ना आंदोलन से निकले केजरीवाल की ईमानदार होने की जो छवि है, उसे सहानुभूति में बदला जाए। विपक्ष इसलिए भी उत्साहित है कि एक जमाने में इंदिरा गांधी, जयललिता और लालू प्रसाद यादव ने अपनी गिरफ्तारी पर स्वयं को उत्पीड़ित दिखाकर आम जन के मन में सहानुभूति की लहर पैदा कर दी थी। और इसके सहारे राजनीतिक रूप से कमबैक करने में सफल रहे। बेशक, जनता के मन में यह भाव रहा है कि केजरीवाल सरकार को काम नहीं करने दिया जा रहा। उपराज्यपाल के साथ उनकी सरकार के टकराव से इस धारणा को बल मिला है। कई मौकों पर उपराज्यपाल के निर्देश और अदेशों के खिलाफ अदालत का दरबाजा तक खटखटाया गया और इसका स्पष्ट संदेश भी जनता तक इस रूप में पहुंचा कि केंद्र केजरीवाल सरकार के कामकाज में अड़चन डाल रहा है।

राजद्र राजन

जिस लाहर स्ट्रॉल जल म भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव को फंसी दी गई थी, वह पूरी तरह ज़मीर्दोज़ हो चुकी है। उसके सामने एक मस्जिद का निर्माण हो चुका है। भगत सिंह की शहादत की धोरहर को भावी पीटियों के लिए संरक्षित कर उसे संग्रहालय का रूप देने की ओर पाकिस्तान के रहबरों की संवेदनहीनता बनी रही करीब एक सदी के बाद भी भगत सिंह व उनके साथियों की शहादत अगर करोड़ों भारतवासियों के लिए प्रेरणादायक बनी हुई है तो यह इस बात का साक्षी है कि सर्वहारा के शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार के विरुद्ध न्यायप्रिय आवाजें हर युग, हर दौर में मुख्य रहेंगी। बीसवीं सदी में महात्मा गांधी के अलावा जिस शख्स ने देश व दुनिया भर में अपने विचारों व शहादत से बेशुमार जनमानस के हृदय को आंदोलित किया, उसके शीर्ष पर केवल एक नाम व उसके साथी सुशोभित हैं। यानी भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव। प्रायः गांधी को अहिंसा का पुजारी और भगत सिंह को हिंसा या आतंक से आज़ादी हासिल करने का प्रतीक माना जाता है। छोटी आयु में ही भगत सिंह कार्ल मार्क्स, लेनिन, मैक्सिम गोर्की व अन्य अनेक लेखकों के विचारों से अभिप्रेरित हुए थे। वे पूँजीपतियों व संसाधनों पर कब्जा जमाए अमीरजादों और मजदूरों, किसानों के मध्य बनी रहने वाले खाई को पाटना चाहते थे। 200 साल पहले कार्ल मार्क्स ने यही स्वन्ध देखा था। आज़ाद भारत के नक्शे पर भगत सिंह मजदूरों व आम आदमी के जिस समान, स्वाभिमान व आर्थिक रूप से समाज में उनके कल्याण व उथान का सपना देख रहे थे, वह साकार होने की बजाय ध्वस्त हुआ है। पूँजी और संसाधनों का गरीब तबके पर नियंत्रण यथावत बना हुआ है। क्रांति का अर्थ खूनी लड़ाई नहीं है। बम या पिस्तौल का प्रयोग एकमात्र उद्देश्य नहीं है। क्रांति का मूल उद्देश्य उस अन्याय को समूल्य नष्ट करना है जिसकी बुनियाद पर शासन प्रणाली का निर्माण हुआ है। किसान, मजदूर हाशिए, पर हैं। उनकी गहरी कमाई

A black and white photograph of a young man from the chest up. He has dark hair styled in a flat-top and a prominent mustache. He is wearing a light-colored fedora hat and a dark, collared shirt. The background is a plain, light-colored wall.

का सारा धन पूंजीपति चख रहे हैं। किसान अनश्वदाता है, लेकिन दाने-दाने को मोहताज है। सूत काटने वाला जुलाहे के पास अपना व अपने परिवार का तन ढाँपने के लिए कपड़ा नहीं है। राजगीर, लौहार तथा बढ़द्वी सुंदर महलों, घरों का निर्माण करते हैं, लेकिन उन्हें सूअर की तरह गंदे बाड़ों में जीवन के अंत तक रहना पड़ता है। फंसी से कुछ हप्ते पहले भगत सिंह ने 'यंग पॉलिटिकल वर्कर्स' पत्रिका में लिखा था, आप क्रांति अमर रहे के नारे लगाते हैं। मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि क्रांति का वास्तविक अर्थ मौजूदा सामाजिक व्यवस्था का तख्ता पलटा है। इसे समाजवाद की व्यवस्था से बदलना होगा। कांग्रेस मध्यवर्ग के दुकानदारों और पूंजीपतियों की पार्टी है। ये ऐसा तबका है जो क्रांति के आंदोलन में अपनी जायदाद प्राप्ती को अपने हाथों से छिन जाने का जोखिम नहीं उठा सकता। क्रांति की सेवा गांवों और फैक्टरियों में है। भगत सिंह समाज की बेशुमार समस्याओं पर एक साथ मुखर थे। साल 1923 में आंध्र प्रदेश के काकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन के बाद अस्पृश्यता पर एक लेख लिखा था। यह लेख उस दौर में अमृतसर से छपने वाली पत्रिका

‘किरत’ में छपा था। वेद, पुराण, उपनिषद, भगवद्गीता आदि धार्मिक ग्रंथ दलितों की पहुंच से बाहर हैं। वे उन्हें छूने की कल्पना तक नहीं कर सकते। वे ब्राह्मणों की परम्परा के अनुसार गले में जेनेल नहीं पहन सकते छुआछूत पर उनका कहना था, ‘किसी भी देश में कर्भे ऐसी सड़ी गली व्यवस्था नहीं होगी जैसी भारत में है। जून 1928 को वे लिखते हैं, ‘बड़ा प्रश्न दलितों का है 30 करोड़ आबादी में 6 करोड़ अछूत हैं। अगर कोई स्वर्ण उन्हें छू लेता है तो उसका धर्म प्रदूषित हो जाता है। अगर वे मर्दियों में जाते हैं तो देवता रूठ जाते हैं कुएं से पानी भरते हैं तो जल प्रदूषित हो जाता है कल्पना करो एक कुत्ता हमारी गोद में बैठ सकता है रसोई में भी जा सकता है, मगर कोई दलित आपके स्पर्श कर ले तो धर्म बर्बाद हो जाता है। महान समाज सुधारक मदन मोहन मालवीय को अगर कोई वाल्मीकि फूटों का हार पहना दे तो वे तुरंत नहाने चले जाते हैं। अपने कपड़े धोते हैं ताकि अछूत के स्पर्श से स्वयं को शुद्ध कर सकें।’ तीनों कांतिकारियों के फंसी के पूर्व और बाद की घटनाओं में महात्मा गांधी की भूमिका को लेकर समूचा देश सकते की स्थिति

म था। दशवासा चाहत था कि गांधी वाइसराय पर फंसी रोक देने का दबाव बनाएँ। लेकिन गांधी राजनीतिक हिंसा, कल्त्तोगारत के विरुद्ध थे। गांधी ने फंसी के बाद कहा था, 'हमें यह समझ कर संतोष करना होगा कि फंसी की सजाएं रद्द करना संधि के प्रस्तावों के निहित न था। मेरी व्यक्तिगत राय से भगत सिंह और उनके साथियों को फंसी से हमारी शक्ति बढ़ गई है।' सरकार पर हम गुणेपन का आरोप लगा सकते हैं, परंतु संधि भांग करने का दोष नहीं मढ़ सकते। फंसी से पूर्व कांग्रेस से लोगों ने अपील की थी कि वह सरकार से समझाते की शर्तों में एक शर्त भगत सिंह व उनके साथियों की रिहाई की मांग रखे। इससे गांधी ने इनकार कर दिया था। वे बम या पिस्टौल कल्ट के विरुद्ध थे। दूसरी ओर मदन मोहन मालवीय फंसी की संज्ञा से बेहद क्षुब्ध और द्रवित थे। 14 फरवरी 1931 को इलाहाबाद से उन्होंने वाइसराय को तार भेजकर फंसी रद्द करने की अपील की थी। नेहरू भी फंसी के बाद ज़ार-ज़ार रोये थे। उन्होंने कहा था, फंसी के बाद देश के कोने-कोने में शोक का अंधकार छा जाएगा। परंतु उनके ऊपर हमें अभिमान भी होगा। जब इंग्लैंड हमसे संधि का प्रस्ताव करेगा, उस समय उसके और हमारे बीच में भगत सिंह का मृत शरीर उस समय तक रहेगा जब तक हम उसे विस्मृत न कर दें। संक्षेप में भगत सिंह व अन्य क्रांतिकारियों के विचारों की प्रारंभिकता हर दौर में रहेगी। जिस लाहौर में भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव को फंसी दी गई थी, वह पूरी तरह ज़मींदाज हो चुकी है। उसके सामने एक मस्तिशक का निर्माण हो चुका है। भगत सिंह की शहादत की धरोहर को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित कर उसे संग्रहालय का रूप देने की ओर पाकिस्तान के रहवारों की संवेदनशीलता बनी रही। वे कोठरियां जिनमें तीनों शहीदों को रखा गया था, का नामोनिशान की एक भी ईंट साक्षी नहीं है। तथाओं पर लटकाने के लिए जिस जगह का इंतेखाब किया गया था, वहां एक गोलचक्रकर बन चुका है जिसके ईर्द-गिर्द सड़कें हैं।

# मौसम की मार से त्रस्त जनजीवन

सुरेश भाई

इस जनवरी-फरवरी के 45 दिनों में जिस तरह से कंपकंपाती शीत और पहाड़ों पर बर्फ पड़नी चाहिए थी, वह नहीं दिखाई दी। शीतकाल में ही मार्च से शुरू होने वाली गर्मी जैसा महसूस होने लगा था। 14 फरवरी को बसंत पंचमी तक भी पूरी तरह से पतझड़ नहीं हो पाया था क्योंकि उस समय तक शीत लहर के साथ बारिश और बर्फ के अभाव में सूखे पते पूरी तरह से धरती पर नहीं गिर सके और लंबे समय तक पतझड़ वाले पेड़ सूखी पत्तियों को ही ओढ़े रहे क्योंकि नमीयुक्त शीत लहर जब चलती है तो पतझड़ वाले पेड़ों से सूखी पत्तियां झटकर जमीन पर गिरती हैं। मौसम की इस बेरुखी से चारों तरफ सूखा ही सूखा दिखाई दे रहा है। शीतकाल में हिमालय क्षेत्र में साढ़े 4 हजार से लेकर 10 हजार फीट के बहुचंच में जो बर्फ पड़नी चाहिए थी, वह इस बार गायब रही। पर्वतीय क्षेत्रों और तराई वाले कृषि क्षेत्र में जहां सरसों के पीले-पीले फूल खेतों में लहलहाते दिखाई देते थे वे भी पहले के जैसे नहीं दिखाई दे रहे। गेहूं और मटर की फसल पानी की कमी के कारण पूरी तरह नहीं उग पाई। ऊँचाई के इलाकों में सेब की फसल भी संकट में पड़ गई है क्योंकि जहां सेब होता है वहां पर शीतकाल में जब बर्फ और बारिश पड़ती है, तभी फसल अच्छी होती है। इस शीतकाल में बारिश की कमी के कारण जंगलों में आग फैलती रही है जो 15 फरवरी के बाद भारी बारिश और

बर्फबारी होने पर ही बुझ पाई। बेमौसमी बारिश ने फिर से मौसम परिवर्तन के बड़े संकेत दे दिए हैं क्योंकि इस दौरान मार्च के प्रथम सप्ताह तक बढ़ती ठंड और बारिश के साथ पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी के कहर ने जम्मू उत्तर प्रदेश, हरियाणा में 12 लोगों की भी जान ले ली है जबकि इस समय किसानों की बोई फसल को तेज बारिश की आवश्यकता नहीं है। लेकिन यहां तो इतनी तेज बारिश हुई कि हिमाचल में हिमस्खलन के कारण चिनाब नदी का बहाव रुका रहा। उत्तराखण्ड में चारधाम की सड़कों पर बारिश और बर्फबारी का दौर जारी है। बरसात के जैसे मौसम में यहां 500 स्थानों पर सड़कें बंद रहीं। मौसम विभाग के अनुसार उत्तरी पाकिस्तान और उसके आसपास के क्षेत्र में पश्चिमी विक्षेप के प्रभाव से लद्दाख, कश्मीर में भी बारिश और बर्फबारी हुई है। बिहार, सिक्किम में टूफान के साथ ओलावृष्टि हुई है। पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, मध्य प्रदेश, पूर्वी राजस्थान, गुजरात, विदर्भ, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा में अलग-अलग स्थानों पर बेमौसमी बारिश हुई। भारी बारिश के कारण हिमाचल के किन्नौर और जम्मू कश्मीर के रामबन में 300 से ज्यादा पर्यटक फंसे रहे जबकि ऐसी स्थिति बरसात में देखी जाती थी। बताया जा रहा है कि मार्च में सामान्य से अधिक वप्रा यानी 117 प्रतिशत से अधिक हो सकती है। मौसम विभाग की चेतावनी है कि इस दौरान दक्षिणी प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण पूर्वी क्षेत्रों, पूर्वोत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत में सामान्य से

कम वर्ष होने की संभावना है जिसके कारण तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा में लंबी अवधि तक लू चलने का पूर्वानुमान है। यह स्थिति मार्च-मई के बीच में अधिक रह सकती है यहां पर ग्रीष्मकाल की शुरुआत से ही गर्मी तेजी से बढ़ जाएगी। इसलिए अल नीनो (मध्य प्रशांत महासागर में समुद्री जल के नियमित अंतराल पर गम होने की स्थिति) गर्मी के पूरे मौसम में बना रहेगा इसके बाद भी अच्छी मानसूनी वर्ष के अनुमान हैं यदि गर्मी और सर्दी की लंबी अवधि चलती रहेगी तो वैज्ञानिकों की वह बात सच हो जाएगी कि 2100 तक पानी ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा। शोधकर्ताओं ने कहा है कि तापमान 3 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा तो हिमालय का 90 फीसद क्षेत्र साल भर में सुखे रहेंगे मौसम में तेज गति के बदलाव के कारण 'परागण प्रक्रिया पर भी असर पड़ेगा। तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने से भी भारत में खेती की जमीन पर सूखे का खतरा 31 फीसद के बीच घट सकता है और 50 फीसद जैव विविधता के लिए आश्रय के रूप कार्य करने में मदद मिल सकती है इसके बावजूद सूखा, बाढ़, फसल की पैदावार में गिरावट के साथ प्राकृतिक आपदाओं के खतरे बढ़ सकते हैं। हमारी हर विकास योजना में मौसम की मार का सामना करने के लिए पूरी तैयारी होनी चाहिए। जलवायु अनुकूल प्लान गांव से लेकर शहर तक बनाना होगा। विकास कार्यों में इस बात का ध्यान रखा जाए कि हर तरह की गतिविधि चलाते

समय पानी को अधिक से अधिक संरक्षित करके संतुलित उपयोग के तरीकों का पालन किया जाए। बरसात के जैसे मौसम में यहाँ 500 स्थानों पर सड़कें बंद रहीं। मौसम विभाग के अनुसार उत्तरी पाकिस्तान और उसके आसपास के क्षेत्र में पश्चिमी विक्षेप्ता के प्रभाव से लदाख, कश्मीर में भी बारिश और बर्फबारी हुई है। विहार, सिक्किम में तूफान के साथ ओलावृष्टि हुई है। पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, मध्य प्रदेश, पूर्वी राजस्थान, गुजरात, विराख, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा में अलग-अलग स्थानों पर बेमौसमी बारिश हुई। भारी बारिश के कारण हिमाचल के किन्नौर और जम्मू कश्मीर के रामबन में 300 से ज्यादा पर्यटक फंसे रहे जबकि ऐसी स्थिति बरसात में देखी जाती थी। बताया जा रहा है कि मार्च में सामान्य से अधिक वप्रा यानी 117 प्रतिशत से अधिक हो सकती है। मौसम विभाग की चेतावनी है कि इस दौरान दक्षिणी प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण पूर्वी क्षेत्रों, पूर्वोत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत में सामान्य से कम वर्ष होने की संभावना है जिसके कारण तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा में लंबी अवधि तक लू चलने का पूर्वानुमान है। प्राकृतिक संसाधनों से चलने वाली आजीविका को नष्ट होने से बचाया जाए। छोटे और सीमांत किसानों के लिए भूमि वितरण की व्यवस्था हो ताकि खेती का दायरा बढ़ाया जा सके। समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में बदलते मौसम और जलवायु के संकट से बचना मुश्किल होगा।

# बद्दिमाग यात्रियों पर सख्ती जरूरी.....

पिछले लगभग ढाई दशकों में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली जिस एक संसाधन से सबसे ज्यादा विकसित व संपन्न हुई है, वह है दिल्ली मेट्रो। अपनी शुरुआत से ही यह अपनी खूबियों की वजह से न सिर्फ लोकप्रिय हुई बल्कि बहुत सारे कार्तिमान भी स्थापित किए। आज मेट्रो का विस्तार न केवल दिल्ली वरन् दिल्ली से लगे पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र यानी गाजियाबाद, नोएडा, गुरुग्राम, फरीदाबाद तक हो चुका है। दिल्ली मेट्रो आए दिन चर्चा का विषय बनती रहती है कभी रिकार्ड यात्रियों द्वारा मेट्रो में सफर के लिए तो कभी दिल्ली मेट्रो में यात्रियों द्वारा तरह-तरह की गतिविधियों के लिए। पिछले कुछ वर्षों में जब से रील कल्चर पापुलर हुआ है दिल्ली मेट्रो रील बनाने वालों का भी एक प्रमुख अड्डा बन गया है। सिंगिंग, डांसिंग से लेकर प्रैंक वीडियो तक दिल्ली मेट्रो में बिना परमिशन के शूट किए जाते रहे हैं और तमाम नियम-अधिनियम और कानूनों के बावजूद दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन इन्हें रोकने में असफल साबित हुआ है। आए दिन दिल्ली मेट्रो में अश्लील हरकतें करते हुए कपल के वीडियो बायरल होते रहे हैं, तो कभी गाली-गलौज करते हुए कुछ यात्री। डीएमआरसी के अनुसार दिल्ली मेट्रो में प्रतिदिन लाखों यात्री सफर करते हैं ऐसे में सभी पर नजर रख पाना संभव नहीं है, इसलिए यात्रियों से अपील है कि अगर वे आस-पास किसी को अश्लील हरकत करते हुए देखते हैं तो तुरंत मेट्रो ट्रेन के कोच में लगे इमरजेंसी बटन को दबाकर ट्रेन ऑपरेटर को भी इसकी सूचना दे सकते हैं। भारतीय दंड संहिता की धारा 294 कहती है कि व्यक्ति किसी भी सार्वजनिक स्थल पर न तो अश्लील कार्य कर सकता है न ही कोई अश्लील गाने बजा सकता है न इस तरह की कोई हरकत कर सकता है, जिससे दूसरे लोग प्रभावित हों। ऐसा करते हुए पाए जाने पर उसको तीन महीने की सजा अथवा जुर्माना या फिर दोनों हो सकता

है। हालांकि इस कानून में अश्लीलता को परिभाषित नहीं किया गया है, परंतु कोई भी ऐसा कार्य जिसे देखकर लोग असहज महसूस करें तो वह अश्लीलता की ही श्रेणी में आता है। अश्लीलता को परिभाषित करना अपने आप में एक जटिल कार्य है, फिर भी सार्वजनिक जगहों पर नियंत्रण निजी क्रियाओं को अश्लील कहा जा सकता है। दिल्ली मेट्रो अधिनियम की धारा 59 के तहत यह प्रावधान है कि कोई व्यक्ति अगर मेट्रो के अंदर किसी प्रकार की अभद्रता या अश्लीलता करते हुए पाया जाता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। उसे मेट्रो से तुरंत उतारकर उस पर जुर्माने के रूप में 500 रु पए दंड का भी प्रावधान है। वैसे ये नियम तब लागू होता है जब व्यक्ति नशे की हालत में हो या उसने किसी के साथ अभद्रता की हो। दिल्ली मेट्रो में आए दिन महिला सुरक्षा को लेकर भी सबाल उठते रहे हैं कभी महिला यात्रियों से छेड़-छाड़ तो कभी उनके साथ अभद्रता की खबरें आती रहीं हैं। इसको लेकर दिल्ली मेट्रो की तरफ से कोई ठोस

कदम नहीं उठाया गया। हाँ दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन रील बनाने जैसे कायरे को पूरी तरह प्रतिबंधित करखा है और ऐसा करते हुए पाए जाने पर उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई के निर्देश भी जारी किए गए हैं। फिर आए दिन चलती हुई मेट्रो में कभी तरह-तरह के स्वतंत्रता करते हुए युवा रील बना रहे हैं तो कभी असहयोगियों की असुविधा का ध्यान रखे बिना प्रेम चुंबन जैसे निजी क्रिया को सार्वजनिक दिखावा कर हुए पाए जा रहे हैं। ऐसा कई बार इंटरनेट मीडिया वायरल होने के लिए भी क्रिया जाता है। अभी पिछले दिनों दो महिलाओं की मेट्रो में हुई लड़ाई का वीडियो तेजी से वायरल हुआ, जिसमें दोनों एक-दूसरे के भद्दी-भद्दी गालियां दे रही हैं। क्या इस तरह वायरल घटनाओं से बाकी सहयोगी प्रभावित नहीं होते? वायरल व्युत्पन्नों पर ऐसी घटना का बुरा प्रभाव न पड़ता? आए दिन मेट्रो में चोरी की घटनाएं हो रही ग्रुप बनाकर चोरी करने वाले गिरोह (महिला/पुरुष दोनों) ऐसी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं, पर इसे





**व्यापार समाचार**

**सरकार 2024-25 की पहली  
छमाही में बाजार से 7.5 लाख  
करोड़ रुपये उधार लेगी**

नई दिल्ली (एजेंसी)। वित्तवर्ष 2024-25 के लिए केंद्रीय बजट में अनुमानित 14.13 लाख करोड़ रुपये के सकल बाजार उधार में से सकार ने दिनांकित प्रतिभूतियों के जरिए पहली छमाही (एच्च) अप्रैल-सितंबर में 7.50 लाख करोड़ रुपये (53.08 प्रतिशत) उधार लेने का फैसला किया है। वित्त मंत्रालय ने यह जानकारी बुधवार दी। इस राशि में से 12,000 करोड़ रुपये सांचें ग्रीन बॉड (एसजीआरए) जारी करके जुटाया जाने का प्रथावाल है। बाजार की प्रतिभूतियों के आधार पर और वैश्विक बाजार प्रथाओं के अनुपर 15-वर्षीय अवधि की एक नई दिनांकित सुधार बुमराह करने का भी नियमित लिया गया है। वित्त मंत्रालय ने कहा कि भारतीय जिवंव बैंक के पारमार्श से उधार कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया गया है। 7.50 लाख करोड़ रुपये की सकल बाजार उधारी 26 सालाहिक नीलामियों के जरिए पूरी की जाएगी। बाजार उधार 3, 5, 7, 10, 15, 30, 40 और 50 साल की प्रतिभूतियों के रूप में होगा। विभिन्न परिपक्वताओं के तहत उधार का दिस्ता (एसजीआरए सहित) होगा = 3-वर्ष (4.80 प्रतिशत), 5 वर्ष (9.60 प्रतिशत), 7 वर्ष (8.80 प्रतिशत), 10 वर्ष (25.60 प्रतिशत), 15 वर्ष (13.87 प्रतिशत), 30 वर्ष (8.93 प्रतिशत), 40 वर्ष (19.47 प्रतिशत) और 50 वर्ष (8.93 प्रतिशत)। सरकार रेडेम्प्शन प्रोफाइल को सुचारू बनाने के लिए प्रतिभूतियों में बदलाव करना जारी रखेगा। सरकार नीलामी अधिसूचनाओं में दर्शाई गई प्रत्येक प्रतिभूतियों के विस्तर 2,000 करोड़ रुपये तक की अतिरिक्त सदस्यता बनाए रखने के लिए ग्रीन शूल विकल्प का उपयोग करने का अधिकार सुरक्षित रखेगा। वित्तवर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में डेजरी बिल जारी करने के जरिए से सासाहिक उधारी पहली सात नीलामियों के लिए 27,000 करोड़ रुपये और बाद की छह नीलामियों के लिए 22,000 करोड़ रुपये होने की उम्मीद है, जिसमें शुद्ध उधारी (-) - 3,000 करोड़ रुपये है। पहली सात नीलामियों में 91 डीटीबी के तहत 12,000 करोड़ रुपये, 182 डीटीबी के तहत 7,000 करोड़ रुपये और 364 डीटीबी के तहत 8,000 करोड़ रुपये का सासाहिक निर्माण होगा और 91 डीटीबी के तहत 10,000 करोड़ रुपये का सासाहिक निर्माण, 182 डीटीबी के तहत 5,000 करोड़ रुपये और तिमाही के द्वारा आयोजित होने वाली छह नीलामियों में 364 डीटीबी के तहत 7,000 करोड़ रुपये होंगे। सरकारी खातों में अस्थायी विसंगतियों का ध्यान रखने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने वित्तवर्ष 2024-25 की पहली छमाही के लिए वेज एंड मैन एडवांस (डब्ल्यूएम) की सीमा 1.50 लाख करोड़ रुपये तय की है।

**जापान की करेंसी येन में भारी गिरावट,  
34 साल के निचले स्तर पर पहुंची**

टोक्यो (एजेंसी)। जापान की करेंसी येन में जबरदस्त गिरावट आई। इससे यह साल 1990 के बाद से डॉलर के मुकाबले अपने सबसे कमजोर स्तर पर पहुंच गई है। इस गिरावट को देखते हुए जापान के टॉप वित्तीय अधिकारियों की एक बैठक हुई। बैठक में जेने से पिर रही करेंसी पर चर्चा की गई और इसे स्टेटल करने के लिए सभावित हस्तक्षेप के संकेत दिए गए। अमेरिकी डॉलर 151,975 येन के उच्च स्तर पर पहुंच गया है। यह आकारामक उछाल 30 से अधिक चर्चों में येन के मुकाबले डॉलर को सबसे मजबूत बनाती है। आपातकालीन बैठक के बाद जापान के चीफ करेंसी डिल्यूमेट मासातो कांडा ने विदेशी मुद्रा बाजार में किसी भी अव्यवस्थित उत्तर-चक्रार के खिलाफ एक्शन लेने की उनकी तैयारी पर जार दिया। यह 2022 में येन को फिरेंड करने के लिए हस्तक्षेप से पहले जारी की गई चेतावनीयों जैसी है। बैठक अंग जापान, वित्त मंत्रालय और जापान की वित्तीय सेवा एजेंसी में बुधवार शाम एक बैठक की। इसके बाद टॉप करेंसी डिल्यूमेट मासातो कांडा ने कहा कि वे अव्यवस्थित विदेशी मुद्रा चालों का जबाब देने के लिए किसी भी कदम से इनकार परियोजना को पहली इकाई शुरू की। इसके बाद एक अंग जापान, वित्त मंत्रालय और जापान की वित्तीय सेवा एजेंसी में बुधवार शाम एक बैठक की। इसके बाद टॉप करेंसी डिल्यूमेट के वैश्विक विदेशी मुद्रा चालों का जबाब देने के लिए एक्शन परियोजना को पहली इकाई शुरू की। इसके बाद एक्शन परियोजना के पहले चरण में 0.5 एमटीपीए (पिलियन टन प्रति वर्ष) क्षमता वाला तांब स्मेल्टर स्थापित करने के लिए वह निर्णय लिया गया है। यह एक हृष्ट तक, यहाँ धारा के खिलाफ तौर रहे हैं। हस्तक्षेप निकट भविष्य में मदद करता है, लेकिन यह दूरी दूरी कालिक समाधान नहीं है। इस साल येन में 7 रुपये की गिरावट अमेरिकी और जापानी बॉन्ड यूल्ड के बीच बढ़ते अंतर से प्रेरित हुई है।

**इकोस (इंडिया) मोबिलिटी एंड हॉस्पिटेलिटी लिमिटेड ने आईपीओ के लिए सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी**

रायपुर। इकोस (इंडिया) मोबिलिटी एंड हॉस्पिटेलिटी लिमिटेड (कॉर्प) वित्त वर्ष 2023 के लिए परिचालन से आय और कर पश्चात लाभ (पैटे) के लिहाज से भारत में कॉरपोरेट जगत को शोप द्वारा चलाई जाने वाली (सोफ्ट डिव्हन) बाहर प्रदान करने वाले सबसे बड़ी और सबसे लाभदायक कंपनी रही (स्रोत: एफएंड एस रिपोर्ट) और इसने 2 अंकित मूल्य (इक्टी शेर्य) के 18,00,000 इक्टी शेर्य) के लिए सेबी के पास डाइप रेड हेंगिंग प्रॉप्रेक्टर्स (डीआरएचपी) दाखिल किया है। कंपनी के प्रवर्तक राजेश लुम्बा, आदित्य लुम्बा, राजेश लुम्बा फैमिली ट्रस्ट और आदित्य लुम्बा फैमिली ट्रस्ट हैं। इस पेशकश के तहत 18,00,000 इक्टी शेर्यों (प्रस्तावित शेर्य) तक की बिक्री पेशकश (अॉफ पॉर्ट सेल औरप्रैस्स) शामिल है, जिसमें राजेश लुम्बा 9,900,000 इक्टी शेर्य; और आदित्य लुम्बा द्वारा 8,100,000 इक्टी शेर्य तक (सेलिंग शेयरहोल्डर) की बिक्री पेशकश शामिल है। यह कंपनी 25 साल से अधिक समय से भारत में फैलून 500 कंपनियों सहित कॉर्पोरेट ग्राहकों को किराए पर शेप्ट डिव्हन कार (सीसीआर) सेवा और कर्मचारी परिवहन सेवा (ईटीएस) प्रदान कर रही है। कंपनी 9,000 से अधिक इकोसीमों से लेकर लग्जरी कार, मिनी वैन और लग्जरी कोच के बड़े का परिवारतान करती है।

# बुमराह को इस्तेमाल करने की रणनीति समझ से परे

हैदराबाद (एजेंसी)। मुंबई इंडियंस के कसान हार्दिक पांड्या के बुधवार रात आईपीएल 2024 मैच के दौरान सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएल) की पारी के 13वें ओवर तक जसप्रीत बुमराह को एक से ज्यादा ओवर न देने के फैसले को हर तरफ आलोचना हो रही है। मेजबान टीम ने 277/3 का स्कोर, बनाया, जो आईपीएल के इतिहास में सबसे बड़ा स्कोर है। ओवर के बाद बुमराह को एक से ज्यादा ओवर तक बुमराह को आलोचना होता है। यह बस चलते ही किरण खुद को ढालने के बारे में है और मैं 15वें, 16वें ओवर तक बुमराह से पूरी गेंदबाजी की, उन्होंने 5 रन दिए और फिर हमने उन्हें 13वें ओवर तक दोबारा नहीं देखा, जब वे 173 रन पर थे। सरायुक्त सात हो चुका था, आपको अपने सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी में बुमराह को जो जरूर थी जो वापस आये और उस अवधि में किरण खुद को एक से ज्यादा ओवर में बुमराह को लगाता है कि वे उन्हें एक गेंदबाजी कर रहा है, इससे अंत में बुमराह को जो जरूर थी जो वापस आये और उस अवधि में किरण खुद को एक से ज्यादा ओवर में बुमराह को लगाता है कि वे उन्हें एक गेंदबाजी कर रहा है। यह बस चलते ही किरण खुद को ढालने के बारे में है और मैं 15वें, 16वें ओवर तक बुमराह से पूरी गेंदबाजी की बाबा चुका होता, कुछ विकेट लेने की कोशिश करता, अगर वह विकेट लेता है, तो आप वेसे भी गति धीमी कर देते हैं। अगर वह आदमी अंत में बुमराह को जो जरूर थी जो वापस आये और उस अवधि में किरण खुद को एक से ज्यादा ओवर में बुमराह को लगाता है कि वे उन्हें एक गेंदबाजी कर रहा है, इससे अंत में बुमराह को जो जरूर थी जो वापस आये और उस अवधि में किरण खुद को एक से ज्यादा ओवर में बुमराह को लगाता है कि वे उन्हें एक गेंदबाजी कर रहा है। यह बस चलते ही किरण खुद को ढालने के बारे में है और मैं 15वें, 16वें ओवर तक बुमराह से पूरी गेंदबाजी की बाबा चुका होता, कुछ विकेट लेने की कोशिश करता, अगर वह विकेट लेता है, तो आप वेसे भी गति धीमी कर देते हैं। अगर वह आदमी अंत में बुमराह को जो जरूर थी जो वापस आये और उस अवधि में किरण खुद को एक से ज्यादा ओवर में बुमराह को लगाता है कि वे उन्हें एक गेंदबाजी कर रहा है। यह बस चलते ही किरण खुद को ढालने के बारे में है और मैं 15वें, 16वें ओवर तक बुमराह से पूरी गेंदबाजी की बाबा चुका होता, कुछ विकेट लेने की कोशिश करता, अगर वह विकेट लेता है, तो आप वेसे भी गति धीमी कर देते हैं। अगर वह आदमी अंत में बुमराह को जो जरूर थी जो वापस आये और उस अवधि में किरण खुद को एक से ज्यादा ओवर में बुमराह को लगाता है कि वे उन्हें एक गेंदबाजी कर रहा है। यह बस चलते ही किरण खुद को ढालने के बारे में है और मैं 15वें, 16वें ओवर तक बुमराह से पूरी गेंदबाजी की बाबा चुका होता, कुछ विकेट लेने की कोशिश करता, अगर वह विकेट लेता है, तो आप वेसे भी गति धीमी कर देते हैं। अगर वह आदमी अंत में बुमराह को जो जरूर थी जो वापस आये और उस अवधि में किरण खुद को एक से ज्यादा ओवर में बुमराह को लगाता है कि वे उन्हें एक गेंदबाजी कर रहा है। यह बस चलते ही किरण खुद को ढालने के बारे में है और मैं 15वें, 16वें ओवर तक बुमराह से पूरी गेंदबाजी की बाबा चुका होता, कुछ विकेट लेने की कोशिश करता, अगर वह विकेट लेता है, तो आप वेसे भी गति धीमी कर देते हैं। अगर वह आदमी अंत में बुमराह को जो

